प्रश्न- भारत व म्यांमार के बीच बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों की समालोचनात्मक चर्चा करें। (150 शब्द)

Critical discuss the growing bilateral relations between India and Myanmar.
(150 Words)

मॉडल उत्तर

दृष्टिकोण:
- भूमिका में भारत-म्यांमार के बीच हाल ही में बढ़ते द्विपक्षीय संबंधों की चर्चा करें।
- अगले पैरा में भारत के लिए म्यांमार की उपयोगिता को बतायें।
- फिर अगले पैरा में भारत-म्यांमार के बीच विवाद के बिंदुओं को बतायें।
- अंत में संतुलित निष्कर्ष दें।

भारत के पूर्व में स्थित म्यांमार एक सहयोगी राष्ट्र की भूमिका के निर्वहन करते हुए देखा जाने वाला राष्ट्र है। म्यांमार को भारत पूर्वोतर के राज्यों के विकास करने एवं अलगाववादियों पर नियंत्रण के साथ-साथ, चीन के हिन्द महासागर व बंगाल की खाड़ी से सटे राष्ट्रों में बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के रूप में देखा जा रहा है।

भारत के लिए म्यांमार की उपयोगिता को निम्न रूपों में देखा जा सकता है-

- मुक्त व्यापार समझौता (2010) पर द्विपक्षीय सहयोग पर हस्ताक्षर होने के उपरांत व्यापार में कई गुना वृद्धि हो जाना।
- म्यांमार से सटे भारतीय राज्य मणिपुर में अलगाववादी समूह NSCN (K) पर सैन्य कार्यवाही में सहयोग किया जाना।
- पूर्वोतर के विकास हेतु म्यांमार को हिन्द महासागर व बंगाल की खाड़ी में चीन की बढ़ती सक्रियता को संतुलित करने एवं शांति सुरक्षा स्थापित करने में सहायक की भूमिका।
- भारतीय मूल के लोगों को म्यांमार आश्रय प्रदान किया है, साथ-ही-साथ उन्हें रोजगार मुहैया कराने में सहायक भूमिका का निर्वहन कर रहा है। जिनकी सुरक्षा भी भारत के लिए आवश्यक है।

  उपरोक्त अच्छे संबंधों के बाद भी दोनों राष्ट्रों के बीच विवाद भी देखा जा सकता है, जैसे भारतीय केन्द्र शासित प्रदेश अंडमान निकोबार द्वीप के निकट बंगाल की खाड़ी में स्थित कोको द्वीप को म्यांमार, चीन को रडार लगाने हेतु दिया जाना, साथ ही साथ OBOR परियोजना के अंतर्गत चीन को Pyauk Phyu बंदरगाह का दिया जाना।
- वर्तमान में रोहिंग्या विवाद ने भी दोनों राष्ट्रों के बीच के संबंध में कटुता लाई है। UNO के रिपोर्ट के अनुसार आतंकवादी सफाई के नाम पर नृजातीय को भी म्यांमार बाहर कर रहा है, भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अवैध रोहिंग्या शरणार्थियों को भारत में स्थान नहीं दिया जाएगा।

  दोनों राष्ट्रों के बीच भविष्य में संबंध को देखा जाए तो भारत की Act East Policy (पूर्व में look East Policy) को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समस्याओं को सुलझाते हुए विकास कार्यों में तेजी लाए। साथ ही भविष्य में दोनों पक्षों के बीच के सहयोग से ASEAN व SAARC देशों को एक मंच पर लाया जा सकता है।

नोट-
- प्रश्नानुसार उत्तर के सभी बिन्दुओं को समाहित किया गया है, निर्धारित शब्द सीमा में व्यवस्थित कर विश्लेषण कर सकते हैं।